World Wide Journal of Multidisciplinary Research and Development

WWJMRD 2017; 3 (5): 64-66
www.wwjmrd.com
e-ISSN: 2454-6615

चन्द्रदीप नन्दलाल यादव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
भारत

Correspondence:
चन्द्रदीप नन्दलाल यादव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
भारत

महात्मा गाँधी के विचारों से परिवर्तित भारतीय सामाजिक स्थिति का एक विश्लेषण

चन्द्रदीप नन्दलाल यादव

सार संक्षेप
परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर (अनवरत रूप से) चलती रहती है। समाज इसी प्रकृति का एक महत्वपूर्ण भाग है इस कारण से सामाजिक परिवर्तन स्वाभाविक है। सभी समाजों में परिवर्तन की प्रकृति एक समाज नहीं होती है। कुछ समाजों में तीव्र तो कुछ में मंद होती है। महात्मा गाँधी एक दार्शनिक अराजकतावादी एवं आदर्शवादी विचारक थे। उन्होंने भारत के सामाजिक बदलावा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गाँधी जी ने सामाजिक परिवर्तन के अनेक साधन बतायेः– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, असहयोग, अनशन, हड़ताल, सविनय अवज्ञा एवं ट्रस्टीशीप, चरखा पद्धति, बुनियादी एवं स्त्री शिक्षा के विचारों के माध्यम में सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया। गाँधीजी के विचारों से परिवर्तित होकर भारतीय समाज की स्थिति में श्रमिकों की स्थिति में सुधार, जाति व्यवस्था में परिवर्तन, स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन, आर्थिक क्षेत्र में प्रगति राजनीतिक चेतना में वृद्धि, सामाजिक जागरूकता में वृद्धि, पारिवारिक क्षेत्र में अधिकारों की प्राप्ति, शक्ति संरचना में बदलाव, शिक्षा का प्रचार–प्रसार के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन हुआ।

संकेताक्षरः– प्रकृति, स्वाभाविक, उद्विकास, परिवर्तन, गत्यात्मक, न्यूनाधिक सत्याग्रह शाश्वत, आविष्कार, पाश्चात्य औद्योगिकीकरण, प्रतिनिधी, ट्रस्टीशिप।

भूमिका
वास्तव में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समाज इसी प्रकृति का अंग है, अतः सामाजिक परिवर्तन प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक है। परिवर्तन की प्रक्रिया कभी रूकती नहीं। हम किसी भी ऐसे समाज की कल्पना नहीं कर सकते जो पूर्णतः स्थिर हो। यदि 1919 और 2019 के समाजों की तुलना करें तो सभी दशाओं में जो परिवर्तन हुए है उन्हें देखकर हम विस्मित हो जाएंगे। मानव समाज की जो संरचना अतीत में थी वह आज नहीं है और जो आज है वह कुछ वर्षो बाद नहीं रहेगी। पूरा समाज ही नहीं, बल्कि व्यक्ति का जीवन भी बचपन से युवावस्था फिर वृद्धावस्था और अंत में मृत्यु के स्तर को परिवर्तित है। क्रमिक परिवर्तन की यह प्रक्रिया उद्विकास कहलाती है, लेकिन यह भी परिवर्तन का ही एक विशिष्ट स्वरूप है। प्रत्येक समाज में परिवर्तन की प्रकृति समान नहीं होती। यहां प्रकृति से हमारा आशय गति तथा स्वरूप से है। कुछ समाजों में परिवर्तन की गति तीव्र होती है तो कुछ में मंद, पर परिवर्तन की प्रक्रिया चलती अवश्य है। इसी प्रकार परिवर्तन के स्वरूप में भी भिन्नता हो सकती है। किसी समाज में धार्मिक पक्ष में तीव्र परिवर्तन होते है तो किसी में आर्थिक या राजनीतिक पक्ष में। यह भी नहीं होता कि समाज के एक पक्ष में तो परिवर्तन होता रहे। जबकि दूसरा पक्ष स्थित बना रहे। सामाजिक जीवन के किसी भी एक पक्ष में तो परिवर्तन होता रहे जबकि दूसरा पक्ष स्थिर बना रहे। सामाजिक जीवन के किसी भी एक पक्ष में परिवर्तन दूसरे पक्षों में भी न्यूनाधिक परिवर्तन अवश्य ही लाएगा। परिवर्तन की अवधारणा समय से सम्बंधित है अर्थात परिवर्तन की गति थी वह ब्रिटिश कालीन समाज में नहीं रही और ब्रिटिश काल में जो गति रही उससे कहीं अधिक तीव्र गति से परिवर्तन स्वतंत्र भारत के समाज में जो रहे है। पुनश्चः यह भी परम्परागत समाजों की तुलना में खुल अथवा मुक्त समाजों में परिवर्तन की गति अधिक होती है।

सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौम और निरन्तर होने वाली प्रक्रिया है। जब हम परिवर्तन शब्द के पीछे सामाजिक शब्द का प्रयोग करते है तो इससे हमारा आशय मानव समाज में होने वाले परिवर्तनों से होता है। आज हमें मानव समाज का जो भी रूप दिखाई देता है, वह वस्तुतः परिवर्तनों की प्रक्रिया का ही परिणाम है। प्रत्येक बात जिसकों हम सामाजिक कहते है, कभी भी स्थित नहीं रहती बल्कि गतिशील और परिवर्तनशील रहती है। सामाजिक परिवर्तन के अर्थ को विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से स्पष्ट किया है। कुछ विद्वानों के अनुसार सामाजिक ढांचे में होने वाले परिवर्तनों

को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है तो कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार सामाजिक सम्बंधों में परिवर्तनों को ही सामाजिक परिवर्तन कहना उचित है। वास्तव में मोटे तौर पर समाज में अथवा समाज के सदस्यों के जीवन में जो परिवर्तन होते है उन्हें ही सामाजिक परिवर्तन कहना उपयुक्त है।

महात्मा गांधी और सामाजिक परिवर्तन की स्थितिः

महात्मा गांधी एक आर्दशवादी दार्शनिक विचारक थे। उन्होंने भारत में सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने ऐसे समाज निर्माण का विचार प्रस्तुत किया जो सत्य व अहिंसा पर आधारित हो, जिसमें किसी प्रकार का शोषण न हो तथा चारों और सहयोग, सद्भाव, प्रेम और समानता का प्रत्यक्ष दर्शन हो। भारत की समृद्धि एवं निर्माण के लिए उनके मस्तिष्क में यह एक स्वप्न था। जिसे उन्होंने साकार बनाने के लिए आजीवन अथक प्रयास किया। गांधी जी ने सामाजिक परिवर्तन के लिए अनेक साधन अपनाए। ये साधन है–सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, ट्रस्टिशिप सिद्धांत आदि अनके आधारों पर उन्होंने सामाजिक परिवर्तन करने का प्रयास किया है।

सत्याग्रह का अर्थ सत्य से लगे रहना एवं असत्य अथवा बुराई से असहयोग करना है। सत्याग्रह एक नैतिक शस्त्र है जिसका प्रयोग में सत्य के प्रसार हेतु ही किया जाना चाहिए। सत्याग्रह सत्य के लिए आग्रह है। जिसे दूसरे शब्दों में सत्य की रक्षा के लिए अहिंसक संघर्ष भी कहा जा सकता है। सत्याग्रही के लिए जहां एक और सत्य और अहिंसा में अटूट विश्वास रखना आवश्यक है वहां दूसरी और सामाजिक परिवर्तन हेतु महात्मा गांधी द्वारा प्रयुक्त प्रविधियों, सामाजिक परिवर्तन एवं इस हेतु जनजागरण में महात्मा गांधी के योगदान का विश्लेषण कर उसका आंकलन किया है।

सामाजिक परिवर्तन : अवधारणात्मक दृष्टिकोण का विवेचनः–

परिवर्तन प्रकृति का एक शाश्वत एवं अटल नियम है। मानव समाज भी उसी प्रकृति का अंश होने के कारण परिवर्तनशी है। समाज की इस परिवर्तनशील प्रकृति को स्वीकार करते हुए। लेखक डॉ0 चन्द्रदीप नन्दलाल का मानना है कि समाज परिवर्तनशील एवं गत्यात्मक है। बहुत समय पूर्व ग्रीक विद्वानों ने भी कहा था, सभी वस्तुएं परिवर्तन के बहाव में है। उसके बाद से इस बात पर बहुत विचार किया जाता रहा है कि मानव की क्रियाएं क्यों और कैसे परिवर्तित होती हैं? समाज के वे क्या विशिष्ट स्वरूप हैं जो व्यवहार में परिवर्तन को प्रेरित करते हैं? समाज में आविष्कार परिवर्तन कैसे लाते हैं एवं आविष्कार करने वालों की शारीरिक विशेषताएं क्या होती है? परिवर्तन को शीघ्र ग्रहण करने एवं ग्रहण न करने वालों की शरीर रचना में क्या भिन्नता होती है? क्या परिवर्तन किसी निश्चित दिशा से गुजरता है ? यह दिशा रेखीय है या चक्रीय? परिवर्तन के सन्दर्भ में इस प्रकार के अनेक प्रश्न किये गये तथा उनका उत्तर देने का प्रयास लेखक द्वारा भी किया गया।

परिवर्तन क्यों और कैसे होते हैं, ये प्रश्न आज भी पूरी हल नहीं हो पाये हैं। डॉ0 चन्द्रदीप नन्दलाल का विचार है कि प्राचीन क्रम में नये को स्थान देने के लिए परिवर्तन होता है। लेखकानुसार सामाजिक परिवर्तन इसलिए होता है, क्योंकि प्रत्येक समाज असन्तुलन के निरन्तर दौर से गुजर रहा है। कुछ व्यक्ति एक सम्पूर्ण की इच्छा रख सकते हैं तथा इसके लिए प्रयास भी करते है। सामाजिक परिवर्तन एक अवश्यम्भावी तथ्य हैं। समाज के स्थायित्व का भ्रम चारों ओर फैलाया जा सकता है। निश्चयात्मकता के प्रति खोज निरन्तर बनी रह सकती है, और विश्व अनन्त है–इस विषय में हमारा विश्वास दृढ हो सकता है, लेकिन यह तथ्य सदैव विद्यमान रहने वाला है। कि विश्व के अन्य तत्वों की तरह समाज अपरिहार्य रूप से और बिना किसी छूट के सदैव परिवर्तित होता रहता हैं।

गाँधीजी के विचारों से परिवर्तित भारतीय समाज की स्थितिः–

श्रमिको की स्थिति में सुधार– विभिन्न काम कल्याण से सम्बन्धित योजनाओं के फलस्वरूप श्रमिकों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। इनके लिए समय समय पर पारित विभिन्न अधिनियमों ने मील–मालिकों या पूंजीपतियों के शोषण से राहत प्रदान की है। श्री संगठनों ने भी श्रमिकों की स्थिति को उन्नत करने में योग दिया है। अब श्रमिकों को अधिक स्वास्थयकर परिस्थितियों में काम करने की सुविधाए मिली है। इनका वेतन, काम के घण्टे छुट्टियाँ, बोनस आदि निश्चित है। इन्हें अब चिकित्सा सुविधाऐं भी उपलब्ध है।

जाति–व्यवस्था में परिवर्तन– वर्तमान समय में जाति में अनेक परिवर्तन हुए है और उसका परम्परागत स्वरूप विघटित हुआ है। जाति में परिवर्तन, विघटन या उसे निर्बल बनाने वाले कारक उस प्रकार है। पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता, औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण, धन का बढ़ता महत्व, स्वतंत्रता आन्दोलन, प्रजातंत्र की स्थापना, धार्मिक आन्दोलन, यातायात एवं संचार साधनों में उन्नति, स्त्री शिक्षा का प्रसार, संयुक्त परिवारों के विघटन जाति पंचायतों का हास जजमानी प्रथा की समाप्ति।

स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन– महत्वपूर्ण परिवर्तन इस प्रकार है, स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिः स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्री शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ है। इसके पूर्व न तो माता–पिता लड़कियों को शिक्षा दिलाने के पक्ष में थे और न ही शिक्षा की दृष्टि से समुचित सुविधाऐ उपलब्ध थी। वर्तमान में लड़कियाँ व्यावसायिक शिक्षा भी ग्रहण कर रही है। शिक्षण से सम्बन्धित ट्रेनिग कॉलेजो एवं मेडिकल कॉलेजो में लड़कियो की संख्या प्रतिवर्ष बढती जा रही है। डॉ. पणिकर ने लिखा है कि स्त्रियों की शिक्षा एवं राजनीतिक जागृति ने उस कुल्हाड़ी को तेज कर दिया है जिसकी सहायता से हिन्दू सामाजिक जीवन की जंगली झाडियां को साफ करना सम्भव हो गया है।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति– ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाली 80 प्रतिशत स्त्रियाँ आर्थिक दृष्टि से कोई कार्य करती रही है। नगरों में भी निम्न वर्ग की स्त्रियाँ घरेलू कार्यो और उद्योगों के माध्यम से कुछ न कुछ कमाती रही है। शिक्षा के व्यापक प्रसार, नयी नयी वस्तुओं के आकर्षण, उच्च जीवन स्तर बिताने को बलवती इच्छा कीमतों ने अनेक मध्यम व उच्च वर्ग की स्त्रियों को नौकरी या आर्थिक दृष्टि से कोई काम करने के लिए प्रेरित किया। अब मध्यम वर्ग की स्त्रियों उद्योगो, दफ्तरों, शिक्षण–संस्थानों, अस्पताल समाज कल्याण केन्द्रों एवं व्यापारिक संस्थानों में काम करने लगी है।

राजनीतिक चेतना में वृद्धि– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्त्रियों की राजनीतिक चेतना में आश्चर्यजनक वृद्धि हुयी है। पार्लियामेंट और विधानमण्डलों में स्त्री प्रतिनिधियों की संख्या और विभिन्न गतिविधियाँ में उनकी सहभागिता, राज्यपाल, मंत्री, मुख्यमंत्री, और प्रधानमंत्री तक के रूप में उनकी भूमिको से स्पष्ट है कि स्त्रीयों में राजनीतिक चेतना दिनों दिन बढती जा रही है।

सामाजिक जागरूकता में वृद्धि– पिछले कुछ वर्षो में स्त्रीयों की सामाजिक जागरूकता में काफी वृद्धि हुई है। अब स्त्रीयों पर्दा–प्रथा को बेकार समझने लगी है। अब बहुत सी स्त्रीयां घर की चार दीवारी के बाहर खुली हवा में सांस ले रही है। अब वे रूढ़ीवादी सामाजिक बंधनों से मुक्त होने के लिये प्रयत्नशील है आज अनेक स्त्रीयां महिला संगठनों और क्लबों की सदस्य है। कई स्त्रीयां तो समाज कल्याण के कार्य में लगी हुई

है। अब तो ग्रामीण क्षेत्रों में भी सामाजिक जागरूकता बढती जा रही है।

पारिवारिक क्षेत्र में अधिकारों की प्राप्ति– वर्तमान में स्त्रीयों के पारिवारिक अधिकारों में वृद्धि हुई है। वर्तमान में स्त्रीयों संयुक्त परिवारों में बंधनों से मुक्त होकर एकाकी या मूल परिवार में रहना चाहती है वे मूल परिवारों की स्थापना कर स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना और पारिवारिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहती है। अब बच्चों की शिक्षा, परिवार की आय के उपयोग, पारिवारिक अनुष्ठानों की व्यवस्था और घर के प्रबन्ध की आय के उपयोग में स्त्रीयों को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त है। आज की बदलती हुई परिस्थितियों में स्त्रीयों को दासी बनाकर नहीं रखा जा सकता है। अब तो मित्र और सहयोगी के रूप में उनका महत्व दिनों दिन बढता जा रहा है।

गांधी जी के विचारों से शक्ति संरचना में भी परिवर्तन आया है। अब प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में उच्च जाति के लोगों को निम्न जातियों के लोगों के पास चुनावों को अवसर पर वोट मांगने जाना पड़ता है। इससे निम्न जातियों को संगठित होने तथा चुनावों में अपनी संख्या की शक्ति को पहचानने का अवसर मिला है। विधान सभाओं और लोकसभा में अनुसूचित जातियाँ एवं जन जातियां के लिए स्थान सुरक्षित होने से अब उन्हें राजनीति में सक्रिय भूमिको निभाने तथा नेतृत्व करने का अवसर मिला है। अब शक्ति संरचना में केवल उच्च जातियों के लोगों का ही महत्व नहीं है, निम्न समझी जाने वाली जातियों को भी शक्ति के पदों को प्राप्त करने का अवसर मिला है।

शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ़ा है, शिक्षा ने लोगों को अन्ध–विश्वासों और सड़ी–गली कुप्रथाओं से मुक्त होने में योग दिया। इससे लोगों में जागरूकता लाने, नयी प्रेरणाओं का संचार करने और आकांक्षाओं के स्वर को ऊंचा उठाने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। जनसंख्या को नियंत्रित करने की दृष्टि से भी देश में काफी कुछ किया गया है। यहाँ प्रतिवर्ष परिवार कल्याण (परिवार नियोजन) कार्यक्रमों पर करोड़ों रूपया खर्च होता है। अब लोग, विशेषतः शिक्षित लोग छोटे परिवार के महत्व को समझने लगे है। परिवर्तन लाने की दृष्टि से प्रारम्भ किये गये विभिन्न कार्यक्रमों के फलस्वरूप देश के करोड़ो लोगो को आगें बढ़ने, प्रगति करने तथा जीवन–स्तर को ऊचा उठाने का अवसर मिला है, अब उनमें सामाजिक और राजनीतिक चेतना दिखाई पड़ती है, परन्तु आज का व्यक्ति विभिन्न कारकों के संयुक्त प्रभाव के फलस्वरूप अपने में सिमटता या संकुचित होता जा रहा है। अब उसे अपने समुदाय समाज और देश की चिंता कम है। अब वह गांधीवादी विचारधारा से कुछ परिवर्तन ला सकता है।

समाज में गांधीवादी ने सामाजिक परिवर्तन के लिए अनेक साधन अपनाऐ जो कि निम्न है– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, वर्ण धर्म का सिद्धान्त, अस्पृश्यता का अन्त, साम्प्रदायिकता एकता, स्त्री सुधार, बुनियादी शिक्षा। बुनियादी शिक्षा वर्तमान में चल रहे भारत सरकार के कौशल विकास की अवधारणा है जो कि महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा पर आधारित है अतः गांधी जी की विचारधारा व सिद्धान्त भारतीय समाज व व्यक्ति के लिये अत्यन्त उपयोगी है, गांधीजी ने ट्रष्टिशिप सिद्धान्त के आधार पर सामाजिक परिवर्तन करने का प्रयास किया।

निष्कर्षः– उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन गांधी का दर्शन चिन्तन का एक विलक्षण प्रयोग है। आध्यात्मिक चेतनाओं और सांसारिक लक्षणों के समन्वय द्वारा गांधी ने राजनीतिक, सामाजिक दर्शन को ऐसा नवीन आयाम प्रदान कर दिया है कि उनकी विचारधारा को राजनीतिक और सामाजिक चिंतन के परम्परागत वर्गीकरणों, व्यक्तिवाद या समष्टिवाद, उदारवाद या समाजवाद या पूंजीवाद, साम्यवाद की परिधि में बांधना संभव नहीं है। गांधी जी ने किसी नवीन विचारधारा के प्रवर्तन का दावा नही किया तथापि उन्होंने राजनीतिक सामाजिक व आर्थिक प्रश्नों पर विचार के लिए एक सर्वथा नवीन और मौलिक दृष्टि से प्रदान की। इस प्रकार से महात्मा गाँधीजी के विचार सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रासंगिक बने हुए है और रहेंगे।

सन्दर्भ सूची–

1. सूरजीत कौर जोली "(सम्पादिका) गांधी एक अध्ययन" नई दिल्ली 2007, पृ.सं.–104
2. सुरेन्द्र वर्मा "मेटाफिजिकल फाउण्डेशन ऑफ महात्मा गॉधीज थॉट", नई दिल्ली 1970 पृ.सं.–42
3. बापू की छाया, "नवजीवन द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण" पृ. सं.–93
4. टुण्डक डॉ. सी. एन. "हिन्द स्वराज की नवीनतम अवधारणा", नन्दलाल प्रकाशन जयपुर 2016 पृ.सं. –101–102
5. डी. जी. तेन्दुलकर "महात्मा गांधी भाग V" बम्बई पृ.सं. –380
6. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद "गांधी जी की देन" पृ.सं.–90
7. यंग इण्डिया 4–6–1927
8. हिन्दी नव जीवन 27–10–1927
9. दृष्टिकोण मंथन, पाक्षिक पत्रिका, नई दिल्ली दिसम्बर 2012
10. दैनिक भास्कर सम्पादकीय पृष्ठ 24–4–2010